ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(1): 57-61
www.allresearchjournal.com
Received: 13-11-2023
Accepted: 15-12-2023

रौशन कुमार
शोध-प्रज्ञ, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. नारायण झा
पर्यवेक्षक, प्रभारी प्रधानाचार्य, ललित नारायण जनता महाविद्यालय, झंझारपुर, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार
शोध-प्रज्ञ, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

'स्वेदजीवी' उपन्यासमे यथार्थक परिदृश्य

रौशन कुमार, नारायण झा

सारांश
मैथिली साहित्यमे उपन्यासकारक रूपमे मधुकान्त झाक प्रवेश एकैशम शदीक प्रथम दशकमे होइत छनि। मौथिली हिनक जीविका मे नहि अपितु जीवन मे छनि, तेँ हिनक प्रयास प्रशंसनीय अछि। कोनो भाषा साहित्य मे उपन्यास लिखब केहेन दुष्कर अछि से सर्वविदित अछि। उपन्यास गद्य साहित्यक सभ सँ सशक्त विधा अछि। एहि विधा मे सभ सँ बेशी श्रम साध्य, समय साध्य आ व्यय-साध्य होइत अछि। श्री झा अपन पहिल उपन्यास कृति "स्वेदजीवी" लए कें उपस्थित होइत छथि। उपन्यासकार अनुभूत जीवनक आधार पर पात्र एवं परिस्थितिक सहज स्वाभाविक चित्रण कयने छथि। उपन्यासकार सारभूत सत्यकेँ, जीवनक घटनाक ढाँचमे, भाव अनुभूति एवं आशाक रक्त मांससँ युक्त कए सजीव एवं साकार रूपमे प्रस्तुत कयने छथि। भावुकता एवं संवेदना उपन्यासकारक प्रेरक शक्ति बनि उभरल अछि। मैथिली साहित्यमे उपन्यासकारक रूपमे मधुकान्त झाक प्रवेश एकैशम शदीक प्रथम दशकमे होइत छनि। मौथिली हिनक जीविका मे नहि अपितु जीवन मे छनि, तेँ हिनक प्रयास प्रशंसनीय अछि। कोनो भाषा साहित्य मे उपन्यास लिखब केहेन दुष्कर अछि से सर्वविदित अछि। उपन्यास गद्य साहित्यक सभ सँ सशक्त विधा अछि। एहि विधा मे सभ सँ बेशी श्रम साध्य, समय साध्य आ व्यय-साध्य होइत अछि। श्री झा अपन पहिल उपन्यास कृति "स्वेदजीवी" लए कें उपस्थित होइत छथि। दरिद्रता, विषमता आ अत्याचारसँ ग्रस्त भए बच्चा, जवान गामसँ पलायन करैत प्रदेश अबैत अछि अपन जीवनक महत्वपूर्ण समय प्रदेशक कल-कारखानमे पेटक गर्मी शांत करबाक लेल गमा लैत अछि। वैह प्रदेश विदाइमे सनेश दैत अछि विभिन्न रंगक रोग। आभावमे प्रारंभ भेल यात्रा अभावमे अंत भए खाक भऽ जाइत अछि। कारखानाक प्रबंधक कारखानाककलमधारी सेवक अछि ओ अपनाकेँ मजदूरसँ बहुत पैघ ज्ञानी आ काबिल बुझैत छैक। ओ पसीनासँ लथ-पथ, रक्तहीन आ अनपढ़ मजदूरक शोषण सभ दिनसँ करैत आयल अछि आ करैत अछि। कागजकेँ स्याहीसँ कारी कयनिहार बाबू लोकनि ओहि किसान मजदूरक बराबरी नहि कए सकैत अछि जे अन्न एवं भोगक सामग्री उत्पादन कऽ मानवकेँ जीवन दैत अछि। उपन्यासकार अनुभूत जीवनक आधार पर पात्र एवं परिस्थितिक सहज स्वाभाविक चित्रण कयने छथि। उपन्यासकार सारभूत सत्यकेँ, जीवनक घटनाक ढाँचमे, भाव अनुभूति एवं आशाक रक्त मांससँ युक्त कए सजीव एवं साकार रूपमे प्रस्तुत कयने छथि। भावुकता एवं संवेदना उपन्यासकारक प्रेरक शक्ति बनि यथार्थ रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि।

कूटशब्दः मैथिली साहित्य, स्वेदजीवी, सामाजिक यथार्थ

प्रस्तावना
कोनो साहित्यकारक साहित्यिक कृति जाहि समाजमे, देशमे आओर कालखंडमे, जन्म लैत अछि ओहि समाज, देश आओर समयक प्रभाव ओहि कृति पर पड़ब स्वभाविक अछि। ओहि कालक तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराक बीचसँ साहित्यकारक चेतनाक विकास होइत अछि, जाहिमे कोनो जाति, समाज एवं राष्ट्रक चित्तवृत्तिक प्रतिबिम्ब होइत अछि। साहित्यकारक व्यक्तिगत दृष्टिकोणकेँ ओहि युगक परिस्थिति आओर बदलैत सामाजिक चेतना बहुत दूर धरि प्रभावित करैत अछि।

बीतल समय साहित्यकारकेँ अनुभव प्रदान करैत अछि, आबए बला समय आशाक संचार करैत अछि, मुदा वर्तमान साहित्यकारक निर्माण करैत अछि। असलमे साहित्यकार युग चेतना सँ प्रभावित रहैत छथि।

कवि, गीत-गजल, उपन्यासकार तथा कथाकारक रुपमे मधुकान्त झा मैथिली जगतमे प्रतिष्ठित छथि। हिनक पहिल उपन्यास'स्वेदजीवी'वर्ष 2008 ई.मे प्रकाशित भेल जे बहुत चर्चित भेल आ मैथिली भाषा एवं साहित्य सँ अभिरुचि रखनिहारक ध्यान हिनक प्रतिभा दिस आकृष्ट कयलक। एकरा बाद श्री झा क्रान्तिरथी (2011) ममता-जोगी (2012) सत्ता-तांडव (2017) ओहि टोलक रामटहल (2022) युगांतकारी (2023) पांच गोट उपन्यास लिखलनि। श्री झा अपन साहित्यिक अवदान सँ मैथिली साहित्यकेँ एक नव दिशा देखोलनि। हिनक उपन्यास 'स्वेदजीवी' तथा क्रान्तिरथी मैथिलीमे उत्कृष्ट रचनाक प्रतीक बनि गेल अछि जे मैथिली उपन्यासकेँ विश्व साहित्यक स्तर पहुँचयबामे सफल भेल अछि। 'स्वेदजीवी' उपन्यासक सन्दर्भमे कीर्तिनारायण मिश्रक कहब छैन्हि जे "ई उपन्यास हमरा जनैत अपना तरहक पहिल उपन्यास अछि। 'स्वेदजीवी' नामकरणक सटीकता एकर कथ्य अथवा विषयवस्तु प्रमाणित करैत छैक।"[1]

उपन्यास आधुनिक मैथिली गद्यक एकटा सुपुष्ट अंग अछि। पद्यक क्षेत्रमे जैह महत्व महाकाव्यक अछि गद्यक क्षेत्रमे उपन्यास ओही महत्वक अधिकारी अछि। साहित्यक अंतर्गत अबए बला सभ विधामे जीवन आओर ओही परिवेशकेँ अभिव्यक्त करै बला सभसँ सशक्त विधा उपन्यास अछि। एही कारणे उपन्यास साहित्यमे युगक संपूर्ण परिस्थिति आओर समस्या समाहित भए जाइत अछि। उपन्यास ओहि समयमे पल्लवित-पुष्पित होइत अछि जखन जनसाधारणक बुद्धि एवं तर्कशक्ति अत्यन्त सक्रिय होइक, कल्पनाशक्ति, विवेचनशक्ति, सक्रिय एवं जागरूक होय। ओना उपन्यासक परिभाषा कतेको तरहसँ देल गेल अछि, किन्तु सर्वमान्य आ सभसँ अधिक जे स्पष्ट अछि से इएह जे उपन्यास जीवनक सूक्ष्म विवेचन उपस्थित करैत अछि। अर्थात् जाहि विधामे जीवनक विविध पक्षकेँ, विविध दृष्टिकोणसँ देखि, ओकर विस्तारकेँ बुझबाक चेष्टा कयल जाए सएह उपन्यास विधा थिक। इएह कारण थिक जे उपन्यासमे चरित्रक बहुलताक संग-संग ओकर कथावस्तुमे व्यापकता दृष्टिगोचर होइत अछि।

'यथार्थ' अंग्रेजीक शब्द (Real) हेतु व्यवहृत भारतीय साहित्यक शब्द थीक। यथार्थ वस्तुतः दर्शनशास्त्र सँ संबंधित शब्द अछि। 'यथार्थक' परभिषा विभिन्न विद्वान द्वारा विविध रुपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। डॉ.त्रिभुवन सिंहक अनुसार "जीवनक वास्तविक अनुभूति यथार्थ अछि।"[2] अनुभूतिक यथार्थ आओर यथार्थकेँ श्रेष्ठ साहित्यक मानदंड मनैत मुँशी प्रेमचंदक कहब छन्हि जे- "साहित्य ओही रचनाकेँ कहब जाहिमे कोनो सच्चाइ प्रगट भेल होय साहित्यमे ई गुण पूर्ण रुपसँ ओही अवस्थामे उत्पन्न होइत अछि, जखन ओहिमे जीवनक सच्चाइ आओर अनुभूति व्यक्त कयल गेल होय।"[3] उक्त अर्थक विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे यथार्थक संबंध मानव आओर ओकर समाजकेँ विविध अंगक संग गहनतासँ जुड़ल अछि। यूरोपमे कार्ल मार्क्सक सिद्धान्तक आश्रय लए यथार्थवादक विकास भेल अछि। ई श्रमिक एवं कृषकक जीवन यथार्थ चित्र प्रस्तुतक उत्पीड़नक विरूद्ध संघर्षक प्रेरणा दैत अछि। यथार्थवाद सामाजिक एवं राजनीतिक विकृति, पाखंड एवं आडम्बरक पर्दाफास करब अपन कर्तव्यक कोटिमे रखने अछि। यथार्थवाद बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान मात्रकेँ यथार्थ बुझैत अछि। ई आर्थिक स्थिति मात्रकेँ सभ कार्य एवं समस्याक हेतु उत्तरदायी बुझैत अछि। ई अकाल, महामारी, महगीकेँ सरकारी शोषणनीतिक परिणाम बुझैत अछि तथा एकर एकमात्र उपचार आत्यचारी शासनक जूआकेँ पटकि देब बुझैत अछि। समाजक प्रमुख ज्वलंत समस्या तथा समकालीन मानवक घुटन एवं पीड़ाक यथार्थ चित्रणमे विश्वास करैत अछि। एकर दृष्टि तथ्यात्मक रहैत अछि। वैज्ञानिक प्रबुद्धताक आलोकमे ई कट्टर सामाजिक व्यवस्था, रुढ़ि एवं अन्धविश्वासक प्रति अनास्थाक भाव प्रगट करैत अछि। यथार्थवाद मात्र उच्च वर्गक लोक धरि अपनाकेँ सीमित नहि रखैछ अपितु मध्य एवं निम्न वर्गीय व्यक्तिक जीवनक विविध पक्षकेँ सेहो अपन चित्रणक आधार बनबैत अछि। यथार्थवाद आदर्शवादी विचार धाराक अनुसार पात्रक जीवनकेँ अस्वाभाविक विशिष्ट मोड़ नहि प्रदान करैत अछि। ई पात्रक समस्त चारित्रिक दुर्बलताकेँ स्वीकार करैत अछि। यथार्थवाद जीवन सत्यक चित्रण करैत अछि तथा एहि क्रममे कोने भेद भाव नहि रखैत अछि। ई स्थूलतासँ सूक्ष्मता दिस उन्मख रहैत अछि तथा परिवर्त्तनशील परिस्थिति एवं वैचारिक दृष्टिकोणसँ प्रेरणा ग्रहण कए कलाकेँ नवीन वातावरणमे गतिशील करैत अछि। यथार्थवादी उपन्यास वस्तुकेँ कल्पनाक रंगमे अनुरंजित कए नहि प्रस्तुत करैत अछि। जहिना कैमरा सँ वस्तुक प्रत्येक हिस्सा एवं वातावरणकेँ यथावत उपस्थित कए दैत अछि तहिना यथार्थवादी उपन्यासकार वक्तव्य वस्तुकेँ यथावत उपस्थित करैत छथि, अपन राग-विरागक अनुसार ओकरा किछु बनाय नहि प्रस्तुत करैत छथि। अपन उद्देश्यक सिद्विक हेतु यथार्थवादी उपन्यासकार वक्तव्य वस्तुक आसपासक प्रत्येक वस्तुक क्रमबद्ध विवरण उपस्थित करैत छथि, समसामयिक घटना एवं रीति-रेवाजक विस्तारपूर्वक उल्लेख करैत छथि, वक्तव्य वस्तुक संग अत्यन्त क्षीण सूत्रसँ सम्बद्ध नग्णय व्यक्तिक सेहो चर्चा करैत छथि, विभिन्न पात्रक बोलीक एनमेन नकल उपस्थित करैत छथि आओर एहि क्रममे जुगुप्सित शब्दक उल्लेख करबामे सेहो संकुचित होइत छथि।

मधुकान्त झा अपन 'स्वेदजीवी' उपन्यासमे गाम तथा कलकत्ता शहरक जाहि श्रमजीवी, कलमजीवी, निम्न एवं निम्नमध्यवर्गक परिवेश तथा जीवन-संघर्ष, पूँजीपति वर्गक शोषण-वृत्ति एवं दओ-पेंच, श्रमिक यूनियनक दोहरी चरित्र एवं दुष्चक्र तथा ओहिठामक श्रमजीवी मैथिलक दशा विशेषकेँ प्रमुख नाम दएकेँ यथार्थवादी परिदृश्यक सृष्टि कयलनि। 'स्वेदजीवी' उपन्यासक सन्दर्भमे

उपन्यासकारक कहब छैन्हि जे "हमर प्रारम्भिक पन्द्रह वर्षक बयस गाममे आ अगिला एगारह वर्षक समय कलकत्ता मे कटल। ई उपन्यास ओही अवधिक अनुभूति पर आधारित अछि। 3मनुष्य सामाजिक प्राणी अछि तथा कोनो सामाजिक घटनाक प्रभाव ओकरा व्यक्तिगत जीवन पर पड़ि सकैत छैक। मानव मनपर जखन कोनो प्रकारक आघात होइत छैक तँ ओकर ओहि समयक चित्तवृत्तिक अध्ययन करबाक हेतु लेखककेँ पात्रक अन्तस्तलमे प्रवेश कए ओकर मानसिक स्थिथिक विश्लेषण करए पड़ैत छन्हि। श्री झा एहि यथार्थवादी उपन्यासक कथानकक संदर्भमे कहैत छथि जे- "'स्वेदजीवी' उपन्यासक कथा, अन्तर्कथाक लेल प्रज्वलित आवेग हमरा टुकड़ी-टुकड़ीमे समाजक सामूहिक अनुभूतिएसँ भेटल जकरा समेटिकेँ निरूपित कए अपनेक सोझाँ प्रस्तुत करबामे सोइरीक दर्द सदृश एक्के संग पीड़ादायक तथा भरोस लायक लगैत अछि। ई कोनो एकठामक घटना पर आधारित कथा नहि अछि आ ने पात्रक समरुपता जानि-बुझिकेँ सृजित कयल गेल अछि। मुदा सामूहिक अनुभूतिसँ बीछल ई उपन्यास जीवन यथार्थसँ एकदम सटल अछि।"[4]

'स्वेदजीवी' उपन्यासक मुख्य पात्र मिथिल आ नायिका शुभांगी, चरितनायक मिथिलक संघर्षशील, बहुआयामी एवं आत्मसजग व्यक्तित्वक अपन विप्लवी विचारधारा आ सक्रिय विद्रोहसँ व्यवस्था परिवर्त्तनलेल, प्रताड़ित-पराजित होइत रहबाक बादो लड़ैत रहबाक अदम्य क्षमताक कारण श्रमजीवी वर्गक लेल एक आदर्श बनि जाइत अछि। मिथिलकेँ बालहि अवस्थामे ओकर माइक आँखिक नोर ओकरा शिक्षित कए देलकैक। मिथिल कहैत अछि- "मायक जतेक नोरक बुन्न हमरा देह पर पड़ल ओतेक जीवन स्कूलक किलास हम पास करैत गेलहुँ। तेँ ठाकुरकेँ जवाब देबा लेल कोनो किताब नहि पढ़य पड़ल।"[5] विपत्ति मनुक्खकेँ अपन साँचमे तेना कुम्हारक आँवा जकाँ पका दैत छैक जे ओ या तँ गलि जाइत अछि अथवा बँचैत अछि तँ टन-टन बजैत अछि। शोषित, पीड़ित एवं श्रमजीवी वर्गक नेता मिथिल अपन परिचय शुभांगीकेँ एहि रुपेँ दैत अछि- "अन्न वस्त्रक मारल समाजससँ दुत्कारल हम ओहि बापक अनाथ बेटा छी जकर बाप ककरो एक पाइ बइमानी नहि कयलकैक। कहियो झूठक सहारा नहि लेलकैक। अपन संतान हो कि संबंधी के, पड़ोसियाक होकि जन हरवाहकेँ ककरो कष्ट कहियो नहि सहलकैक। सभलेल मरलैक। किछु गुण तँ बेटोमे आबक छलै, अयलैक। आर किछु नहि। अन्याय छोट होय कि नमहर बर्दाश्त नहि अछि, बस।"[6]

एहि उपन्यासक तेसर प्रमुख पात्र सुधीर महतो, ओरियेंट पेन फैक्ट्री, कादापरक लेबर सप्लायर छल। ओ अपन गाम/क्षेत्रक अनेक मजदूरकेँ रोजगार दिऔने छल। ओकर सरदारीक डंका सभठाम बजैत छलैक आ सभ मजदूर अपनाकेँ ओकर कृपाश्रित बुझैत छल। श्रम-प्रबन्धन एवं लेबर यूनियन सँ तालमेल राखि ओ हड़ताल, दंगा, हत्या, अपन संकेत पर करबा सकैत छल। ओकर विरोध करबाक क्षमता ककरोमे नहि रहैक, नै मिल प्रबंधकमे नै आन मजदूर वर्गमे।

पूँजीपति एवं ओकर तंत्रक योजनाक कागती रुपान्तरणमे कलमजीवी तथा निरन्तर उत्पादनमे लागल श्रमजीवी वर्ग द्वारा उत्पादित वस्तुक वास्तविक मूल्यांकन नहि। मिलमालिक, ठीकेदार, सप्लायर, पुलिस, दलाल, प्रशासन, लठैत, एवं यूनियनक नेता सभक लक्ष्य आ भक्ष्य ओकरा द्वारा उत्पादित वस्तु आ ओहिसँ होइ बला लाभ होइत छैक। अनपढ़ कुशल श्रमजीवीक दु:ख-दर्द, जीवन-स्तर, शिक्षा-स्वास्थ्य आ सम्मान औधोगिक उत्पादन एवं व्यापारिक अबूझ संजालमे धोखा खाइत रहैत छैक। ई सर्वहारा वर्ग मार्क्सवाद/गाँधीवाद सिद्धान्तक बोझसँ दबल दुनियाक मजदूर एक होय, हम अपन हक लए कए रहबक नारा लगबैत अपन नियोजन एवं नेताक दुष्चक्रमे फँसल रहैत अछि। एहि सम्पूर्ण परिदृश्यक अन्तप्रदेशमे प्रविष्ट भए औपन्यासिक वृतान्तक सृष्टि कयलनि। श्री झा व्यवस्थाक पक्ष-प्रतिपक्षक छलतंत्रकेँ देखार करैत मजदूर सभक लेल पसीनाक पौष्टिकसुगन्ध जोहैत छथि, कलम चलौनिहारक समतुल्य, उत्पादनकर्त्ताक लेल उत्पादित वस्तुसँ प्राप्त होय बला सुखक अनुपातमे मजदूरी निर्धारण चाहैत छथि, एतबए नहि ओकरा लेल सुख-सुविधा एवं सम्मानजनक जीवन संगहि ओकर अस्तित्वगत संघर्षकेँ मिलमालिक, गुंडातंत्र एवं तथाकथित राजनैतिक तथा श्रमिक नेताक, दूरभिसन्धिसँ बचाबए चाहैत छथि। कादापरक ओरियेंट कारखानाकेँ केन्द्रमे राखि अपन कथा-परिधिमे अनेक सामाजिक समस्या, विसंगति प्रवासी मैथिलक मानसिकता एवं मिथिलाक जर्जर दशाकेँ उत्खनित करैत छथि। बाढ़ि-सुखाड़, अभाव-अशिक्षा आ बेरोजगारी सँ ग्रस्त मिथिलाक मजदूरवर्ग रोजी-रोटीक खोजमे कलकत्ता जाइत छल अथवा लए जायल जाइत छल। कलमगिरीक मानसिकता आ शारीरिक श्रमसँ परहेजक कारण कलकत्ता मिल-फैक्टरीमे बंगाली मजदूरक संख्या नगण्य होइत छल। ओकर भारपाइ बिहार, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश आदि प्रान्तसँ ठीकेदार तथा दलालक माध्यमसँ मजदूर जुटाओल जाइत छल।

चरितनायिका शुभांगी आ पेपर मिलमे कार्यरत ओकर पति गिरधारी एक दोसरक अन्तरकथाक सृष्टि करैत छथि। शुभांगी ई एक अबला नारी थिक जे जेठक खेतक आरिक धुर, कतोको ताप, कतोको जलन, कतोको मनोरथ, कतोको सपना ई कोखिमे पालिकेँ रखने अछि आ भगवान छथि जे गुमसरैत आकांक्षाक पूर्ति लेल कोनो दुआरि नहि खोलैत छथिन। शुभांगी जिनकासँ विआहल गेल छलि ओ एकटा नपुंसक पुरुष छल मुदा समाजमे नपुंसकक प्रति अनादर, उपेक्षा आ घृणाक भाव छैक। पुरुषकेँ नपुंसकताक कलंकसँ बचबाक लेल ओकर बिआह कए देल जाइत छैक आ बिआहक बाद निस्सन्तानताक कारण ओकर पत्नीक बांझपन मानल जाइत छैक। एतबे नहि ओकरा डाक्टर, वैध, हकीमकेँ देखाओल जाइत छैक, जाँच कराओल जाइत छैक आ अन्ततःओकरा बांझ करार कए उपेक्षा, ताड़ना, घृणाक पात्र बना देल जाइत छैक। कियो पुरुषक पुंसत्वहीनताक रहस्य नहि खोलैत

अछि। शुभांगी सन्तानाकांक्षिणी अछि। ओ इलाजक नाम पर कलकत्ता अबैत अछि, अपन पतिक प्रति ओ पूर्णतः समर्पित अछि किन्तु ओकर असमर्थताकेँ ध्यानमे राखि, सन्तानक लेल ओ पर पुरूषगमनक मानसिकता बनबैत अछि। पति ओकरासँ सहमत छैक। अपन एहि कामनाक पूर्तिक लेल, मिथिलक प्रति ओ आसक्त होइत अछि, ई जानैत जे अपन पत्नी उषाक प्रति ओकरामे एकान्त निष्ठा छैक आ कोनो तरहक चारित्रिकस्खलन ओकरा स्वीकार नहि छैक। उषा ओकर सन्तानेच्छाक पूर्तिक लेल अपन पति मिथिल आ शुभांगीकेँ मौन स्वीकृति दए दैत छैक किन्तु जखन मिथिलक पुत्र सुधाकान्त पढ़ए लेल कलकत्ता आबि जाइत छैक तँ ओ ओकरे पुत्र मानि सन्तुष्ट भए जाइत अछि आ ओकर पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षामे अपनाकेँ लगा दैत अछि। ई परिवर्तन मिथिलक संघर्षमे सहभागी होयबाक कारणे, शुभांगीमे होइत छैक जे ओकरा अनुकरणीय बना दैत अछि। पृथ्वी पर सदैव अन्हार नहि रहैत छैक तहिना ककरो जीवनमे सदा दुख नहि रहि सकल अछि। हर चीजक अंत अवश्यम्भावी छैक। लेकिन दुखक अंत देखब सभहक नसीबमे नहि होइत छैक से सोचि शुभांगी बिना नारी चेतनाक झंडा लेने क्रान्तिकारी चेतनाक आधुनिक स्त्री जे मातृत्वक लेल पुरुषक अक्षमताक लांक्षित कयने छथि।

एहि उपन्यासक दोसर नारी पात्र उषा छथि जे मिथिलक पत्नी छथि। ओ गाममे रहि नाना प्रकारक कष्टकेँ सहैत अपन पुत्रक भविष्यक लेल उधोगशील छथि। पति मिथिलक संघर्षमय जीवन, ओकर पत्नी प्रेम, सन्तानक प्रति दायित्व बोध, सामाजिक सरोकार, निम्नवर्गीय उपेक्षित-शोषित, किसान-मजदूर वर्गक हक लेल युद्धरत, सभकेँ ध्यानमे राखि कष्टमय जीवनक दंशकेँ बिसरल रहैत अछि आ मिथिलक लेल प्रेरणास्रोत बनल रहैत छथि। उषाक दयार्द्र सहानुभूति जाहि उदारताक संग अपन सम्बन्धक बहिन निस्संतान शुभांगीक प्रति छैक ओ ओकरा उदात्त आ आदर्श बना दैत छैक। शुभांगीकेँ निस्सन्तान कहैबाक कलंकसँ मुक्ति दिएबाक लेल आ मातृत्व बोध करेबाक लेल ओ अपन एकनिष्ठ पतिकेँ ओकर अंकशायी होयबाक लेल प्रेरित करैत अछि। ईर्ष्या आथवा सौतिनिया डाहक विपरीत ओ समाजिक व्यवस्थाक भीतर रहैत, फोंक पुरूष वर्चस्वक पाखण्डकेँ तोड़ि कोनो स्त्रीकेँ सन्तानेच्छाक क्षमता अछैत सन्तोत्पादान नहि कए सकबाक पीड़ा आ बांझ कहैबाक कलंक सँ मुक्ति दियाबए चाहैत छथि। स्त्रीकेँ ओकर स्वाभिमान आ सामर्थ्यक स्वीकृति एवं सम्मान दियाबए चाहैत छथि। नारी संस्कारक एहि बदलावमे वैवाहिक सम्बन्धमे पुरुष श्रेष्ठताक पाखंड पर प्रहार अछि। एहि उपन्यासमे जतय एक दिस मैथिल नारीक पति प्रेम, संतान धनक जे आतुरता छै ओकरो अभिव्यक्ति भेल अछि। मिथिलाक माटि पानिकेँ मिथिलाकेर भौगोलिक सीमाक बाहर एक सुदूर प्रदेश कलकत्तामे प्रवासी मैथिलक समाजमे प्रतिष्ठित कए माटि-पानिसँ प्रेम एवं सम्मान-भावकेँ देखाओल गेल अछि तँ दोसर दिस प्रवासी मैथिलमे मिथिलाक अभाव-पूर्तिक लेल सतत संघर्षशीलताक अभिव्यक्ति भेल अछि। मिथिल कोना अपन परम्परा आ संस्कृतिसँ प्राप्त ज्ञानक पीठपर चढ़िकेर, आधुनिक प्रजातांत्रिक पद्वति एवं संसारक सभ जनान्दोलनक सारत्वक छड़ी लए आगू बढ़बाक प्रयास करैत अछि। कोना एकठाम पत्नीव्रता बनि आधुनिकताकेँ नकारैत अछि आ दोसर ठाम एक श्रमजीवी किसान-मजदूरकेँ कलमजीवी बाबूवर्गसँ आगूक शक्ति मानि पूजनीय बनबय चाहैत अछि। कोना उत्पादित वस्तुक दाम नहि अपितु उत्पानक उपभोगसँ प्राप्त अमृत रसक मूल्य स्वेदजीवी लेल मंगैत अछि। मजुमदारक पत्नीक चित्कारसँ उत्पन्न हाहाकार आ ताहिमे ओकर बाल-बच्चाक आँखिसँ अविरल बहैत नोरक धार आ हिचुकब सुनि मिथिल करुणासँ आप्लावित भए उठैत अछि। शुभांगीकेँ मिथिलक बीरत्व देखि अपन मनोरथ हेरा गेलनि आ सुधाकान्तकेँ पिताक साहस एवं त्यागक अभिवादनमे अपन भविष्य तथा गामक देवीरुपा मायक सुधि उड़िया गेलनि। लेकिन कर्मचारी संघक अध्यक्ष मजुमदार साहेबकेँ कलमजीवी बाबू लोकनिक स्वेदजीवी समाजक समानताक लेल मिथिलक बलिदानक आह्ववान श्रमसंगठनक आइ धरिक लक्ष्यकेँ ध्वस्त करैत भेटलनि। मनहि मन निर्णय कयलनि जे मिथिलक समानताक जे मात्र सम्पत्ति नहि अपितु जीवनक प्रत्येक मोड़ लेल सपना अछि तकरा लेल संघर्ष करब आ कलम आ कोदारिक मजदूरकेँ बरोबरिक सम्मान दियेबाक लेल प्राण धरि न्योछावर करब। जे खेतक मजदूर करखानाक मजदूरसँ उत्पादित वस्तुक मूल्य जखन पृथ्वी पर जीवन रक्षक बनि अमूल्य होइत अछि तखन ओकरा मात्र मजदूरी भुगतान कए केओ मुक्ति कोना पाबि सकैत अछि?मिथिलकेँ मजदुरक पसेना पर मालिकक बनैत हवा महल गड़ैत छलनि। जाहि हाथसँ मजदूर अन्न उपजाकेँ संसारकेँ खुअबैत अछि। जाहि हाथसँ मजदूर ईटा पाथरकेँ जोड़ि घर बनाए संसारक छत आ चार दैत अछि, जाहि हाथसँ मजदूर धोती साड़ी बुनि संसारकेँ पर्दा दैत अछि ताहि हाथकेँ दिमाग एवं बुद्विसँ छोट मानि कम वेतन वा मजदूरी लोक किएक दैत अछि तकर अर्थ मिथिलकेँ नहि बुझाइत छनि। महँगाइक कारणे मजदूरक बचत घटल जाइत छलैक, परिवार आ जिम्मेवारी बढ़ल जाइत छलैक। मुदा मालिक तँ मजदूरकेँ पालतू पशु जकाँ मासमे एकबेर चारा फेकि फोंफ कटैत रहैत छल। विरोधक स्वर धरि सुनबामे असमर्थ छल। मालिकक ई प्रवृत्ति मिथिलकेँ एकदम पसिन नहि छलनि। मने-मन कतेको बेर चाहक पानि जकाँ भफा जाइत छलाह। ई कोन मालिकपना भेल जे मशीन पर अपन जीवन देनिहार मजदूरसँ मालिक वा मैनेजमेंट भरि पोख बात तक नहि करैत अछि। ई मैनेजमेंट कानमे तुर आ आँखि पर पट्टी बान्हि घुमैत अछि। ई अन्याय हम नहि सहि सकैत छी। एहि अन्यायक निराकरण लेल एकजुट भए सभ ठाढ़ होय जाउ से समय आबि गेल अछि जे पूँजीपतिक दिमागी बड़प्पन भावनाकेँ सदाक लेल तहस नहस कए देल जाए। मजदुरक हाथक ताकतक प्रदर्शन कए पूँजिपतिक घमण्ड तोड़ि देल जाए। ई स्वभाव एवं विचार मजदूरक भाग्योदयक अभिनव सूत्रपात करैत अछि। मिथिलक एकनिष्ठ

भाव आओर विचारधारासँ स्पष्ट होइत अछि जे उन्नतिक मार्ग पर जयबा लेल बाधा, विघ्न एवं पड़ोसियाक ईर्ष्या, दमन बड्ड हितकारी होइत छैक। वैह शक्ति एवं प्रेरणा दैत छैक बराबरीक लेल युद्व करबा लेल अपन माथक पागकेँ ऊँच करबाक लेल। अड़ोसिया पड़ोसियाक उच्छन्नरक बिना गामक जमीन्दारक टेरही बिना, कियो आगि पर चलबाक शपथे नहि खायत। तहिना समाजमे डाह कयनिहार, इर्ष्यालु आ दुष्ट नहि होयत तँ ओकर प्रतिकार कयनिहार जन्मे नहि लेत। जीवनक सुख-दुखकेँ नपबाक लेल कोनो एक तराजू कारगर नहि होइत अछि, किएक तँ जीवन अनेक वस्तुक सहयोग, सहभागिता एवं शक्तिसँ निर्मित होइत छैक। जीवनक सुख-दुखक अनेक कारण होइत छैक। एक पर दोसर आश्रित एहि जटिल जिनगीक नाप-जोखक लेल कोनो फार्मूला कहाँ होइत छैक। पूँजीपतिक बदलैत दोस्त-दुश्मनक कारण ओकर अपन स्वार्थ होइत छैक, कोनो लोक नहि। जावत उत्पादनकर्त्ता किसान मजदूरक वस्तु-जात सामानक मूल्य दए कीनिके लोक धन्य होइत रहत आ न्यायप्रिय बनल रहत तावत घामजीवी मनुक्खकेँ कल्याण नहि हेयतैक। जहिया धरि घामजीवी मनुक्खक उत्पादित वस्तुक भोगोपरान्त प्राप्त सुख आनन्दक मूल्य किसान-मजदूरक भोजन, आवास, कपड़ा, मनोरंजन, एवं ज्ञानार्जन पर धनीकक बरोबरि खर्च नहि होयत तावत ई मनुक्ख जाति शान्ति नहि पाबि सकत।

निष्कर्षत

'स्वेदजीवी'उपन्यास मजदूर आ उपेक्षित वर्गक प्रति संवेदना, सहानुभूति एवं सम्मानसँ रहित औधोगिक तथा सामाजिक विडंबना व्यवस्थाक प्रतिरोधमे रचित महत्वपूर्ण उपन्यास अछि। घामजीवी मजदूर-किसान लेल एवं पुरुषक छाह तर किकियाइत मानव दायिनी नारीगण लेल कतहु न्याय नहि अछि। शोषण, अत्याचार एवं अपमानक बोझ तर दबल श्रमजीवी कुहरि रहल अछि, मसिजीवी वर्ग कल-बल छलसँ सभ सुख सम्मान पबैत अछि। मिथिलाक सामाजिक जीवनमे होइत परिवर्त्तनक चित्र एहि उपन्यासमे भेटैत अछि। शोषितक जागरण तथा अभिजात वर्गक ह्रासक नीक संकेत एहिमे भेटैछ। युगक यथार्थक अभिव्यक्ति एहि उपन्यासमे नीक जकाँ भेल अछि। एहि तरहेँ सामाजिक यथार्थकेँ श्री झा व्यापक अर्थमे प्रस्तुत कयलनि।

संदर्भ

1. झा, मधुकान्त. 2008. स्वेदजीवी: शेखर प्रकाशन, पटना, पृष्ठ संख्या- 4
2. सिंह, त्रिभुवन. 1946. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद: हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा. लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ संख्या- 79
3. मणेर, डॉ. शहाजहान. 2009. सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव: श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या- 54
4. झा, मधुकान्त. 2008. स्वेदजीवी: शेखर प्रकाशन, पटना, पृष्ठ संख्या- 9
5. तत्रैव, पृष्ठ संख्या- 26
6. तत्रैव, पृष्ठ संख्या- 34